10

अध्यापक शिक्षा संस्थानों के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन

सुरेंद्र कुमार*
प्रेम शंकर राम**

इस शोध-पत्र में अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन (वाराणसी जनपद के संदर्भ में) किया गया। शोध में वाराणसी जनपद के स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों के 120 शिक्षक-प्रशिक्षकों का चयन सोद्देश्य चयन विधि के द्वारा किया गया। आँकड़ों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया। शोध सांख्यिकीय विश्लेषण के रूप में मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया, आँकड़ों के विश्लेषण के पश्चात यह प्राप्त हुआ है कि वाराणसी जनपद के स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के अधिकांश शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर निम्न पाया गया एवं इसके साथ ही लिंग (महिला या पुरुष), क्षेत्रीयता (ग्रामीण या शहरी) एवं विषय वर्ग (कला एवं विज्ञान) के शिक्षक-प्रशिक्षकों मे व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।

प्राचीन काल से अब तक देखा जाए तो शिक्षा, व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के निर्माण में उसके भविष्य को ढालने तथा परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। कोठारी आयोग (1964–66) का कथन है, "भारत के भाग्य का निर्माण हमारी कक्षाओं मे होता है।" (शर्मा, आर.ए., 2008, अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण तकनीकी, पृष्ठ 3) शिक्षक-शिक्षा प्रणाली का केंद्र है। राष्ट्र का हित शिक्षक हित पर निर्भर है। शिक्षक के माध्यम से लोगों में ज्ञान, रचनात्मकता, जीवन कौशल, नैतिक मूल्य व सामाजिक ज़िम्मेदारी का विकास होता है। डॉ. राधाकृष्णन ने लिखा है कि "समाज में अध्यापक का स्थान बड़ा महत्वपूर्ण है वह एक पीढ़ी को बौद्धिक परंपराओं तथा तकनीकी कौशल पहुँचाने का केंद्र है, और सभ्यता के प्रकाशन को प्रज्जवलित रखनें में सहायक होता है'' (गुप्ता, और ममता. 2009, *भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्या*, पृष्ठ 392) इस प्रकार किसी राष्ट्र के भविष्य का संरक्षक शिक्षक है। इस अमूल्य योगदान के कारण हुमायूँ कबीर का कथन है कि "वे (शिक्षक) राष्ट्र के भाग्य निर्णायक है" क्योंकि शिक्षकों का शिक्षण कार्य

**शोधार्थी*, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय 221 005
***प्रोफेसर*, शिक्षा संकाय,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय 221 005

बौद्धिक विकास का मनोवैज्ञानिक एवं व्यावहारिक प्रक्रिया है जो मनुष्य के चेतना को विकसित करने का उद्यम है। इसको उत्तम बनाने के लिए अध्यापक शिक्षा-संस्थानों के शिक्षक-प्रशिक्षकों में ज्ञान, कौशल, अनुभव, चिंतन व सकारात्मक व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का होना आवश्यक है, ताकि भावी पीढ़ी को सीखने व सिखाने में महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सके व आगे आने वाली शैक्षिक चुनौतियों से लड़ने, शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि एवं समाज का बहुमुखी विकास हो सकें।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में भारत में लगभग 1700 शिक्षक-शिक्षा संस्थान हैं, उसमें से लगभग 92 प्रतिशत निजी स्वामित्व वाले हैं। उच्च न्यायालय द्वारा गठित जे.एस. वर्मा कमीशन (2012) के अध्ययन के अनुसार, इन संस्थानों की बड़ी संख्या शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास भी नहीं करते है इसके बजाय ये संस्थान व्यावसायिक दुकान की तरह काम कर रहे है। निजी शैक्षिक गतिविधियों का साधन हो गए है जिससे उन संस्थानों के भावी अध्यापक या शिक्षक-प्रशिक्षकों का शोषण हो रहा है और अध्यापनरत शिक्षक-प्रशिक्षकों को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जैसे— कम वेतन मिलना, समय पर न मिलना शैक्षणिक ज़िम्मेदारी थोपना, पक्षपात, स्वतंत्रता की कमी, राजनीति, अनैतिक व्यवहार और संस्थानों में अधिक समय देना है। जिससे शिक्षक-प्रशिक्षकों को आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, व्यावसायिक व शैक्षिक परिस्थितियों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। जिसके कारण शिक्षक-प्रशिक्षकों का व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति प्रभावित होने लगती है। यह आगे शिक्षक-प्रशिक्षकों से होता हुआ भावी अध्यापक व समाज पर पड़ने लगता है। यादव, ए.के. (2002) ने शिक्षक-प्रशिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन व्यक्तिगत चरों के आधार पर किया और यह पाया कि शहरी छात्राध्यापकों की अपेक्षा ग्रामीण छात्राध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति ज़्यादा सकारात्मक थी। महिला छात्राध्यापिका की पुरुष छात्राध्यापकों की अपेक्षा शिक्षण कार्य में अधिक रुचि थी व सामान्य वर्ग के छात्राध्यापकों की शिक्षण के प्रति अन्य वर्ग से अधिक सकारात्मकता थी। इस प्रकार शिक्षण कार्य पर क्षेत्रीयता, लिंग, वर्ग का प्रभाव पड़ता है। यादव, एस.के. (2011) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि औपचारिक रूप से शिक्षण प्राप्त व दूरस्थ माध्यम से प्राप्त प्रशिक्षण की अपेक्षा शिक्षण के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति थी। हुसैन, ए. (2018) ने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षण व्यावसायिकता के प्रति पुरुष छात्राध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति महिला छात्रध्यापिकाओं से अधिक सकारात्मक थी। विज्ञान वर्ग शिक्षकों की कला वर्ग एवं ग्रामीण शिक्षकों का शहरी शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति थी। सिंह, एस. (2021) ने अपने अध्ययन में बताया कि शिक्षक प्रशिक्षकों में शिक्षण व्यावसायिकता लिंग और योग्यता पर निर्भर करती है। उपर्युक्त शोध अध्ययन करने के उपरांत व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति के क्षेत्र में शोध की नितांत आवश्यकता है। अतः शोधार्थी के मन में निम्न प्रश्नों के उत्तर की जिज्ञासा उत्पन्न हुई इस आधार पर अध्यापक शिक्षा संस्थानों के शिक्षक-प्रशिक्षकों की

व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन नामक शीर्षक का चयन शोध के लिए किया गया है।

शोध प्रश्न

1. अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर क्या है?
2. क्या अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के महिला एवं पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति में अंतर है?
3. क्या अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति में अंतर है?
4. क्या अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति में अंतर है?

शोध समस्या अभिकथन

"अध्यापक शिक्षा संस्थानों के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन"।

संक्रियात्मक परिभाषा

अध्यापक शिक्षा संस्थान— प्रस्तुत अध्ययन में अध्यापक शिक्षा संस्थानों से तात्पर्य एन.सी.टी.ई. द्वारा मान्यता प्राप्त डिप्लोमा इन एलिमेंट्री एजूकेशन (डी.एल.एड.) संस्थानों से है।

शिक्षक-प्रशिक्षकों— यहाँ शिक्षक-प्रशिक्षकों से तात्पर्य डी.एल.एड. संस्थानों के छात्राध्यापकों को प्रशिक्षित करने वाले अध्यापकों से है।

व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति

"अभिवृत्ति किसी मनोवैज्ञानिक विषय के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक भाव की मात्रा को व्यक्त करता है।"

इस अध्ययन में व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति से तात्पर्य शिक्षक-प्रशिक्षकों का शिक्षण के प्रति सकारात्मक व नकारात्मक भाव से है। यहाँ सकारात्मक भाव का अर्थ शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर उच्च होने से है व नकारात्मक भाव का अर्थ शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर निम्न होने से है।

शोध उद्देश्य

1. अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर ज्ञात करना।
2. अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के महिला एवं पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के कला एवं विज्ञान वर्ग शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

अध्ययन की शोध परिकल्पना

H_1. अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के महिला एवं पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

H_2. अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

H_3. अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

संबंधित साहित्य सर्वेक्षण

शर्मा, आर. (2013) ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन किया और पाया कि हिंदी माध्यम के शिक्षकों और अंग्रेजी माध्यम के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति सकारात्मक थी। शहरी, ग्रामीण विद्यालयों में अध्यापन कर रहे पुरुष शिक्षकों का शिक्षण अभिवृत्ति में अंतर था व महिला शिक्षक ग्रामीण एवं शहरी में समानता थी। फोनिया, वी. (2016) ने माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन कर बताया कि निजी व सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के स्थायी व अस्थायी अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति समान थी। सोइबमच. ए. (2016) ने शिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन शिक्षकों की योग्यता एवं शिक्षकों की उम्र के आधार पर किया जिसमें कम शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों की अपेक्षा ज़्यादा योग्यता वाले शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति अधिक थी।

शोध अभिकल्प

शोध विधि— प्रस्तुत अध्ययन में वर्णात्मक सर्वे विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या— प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश के वाराणसी जनपद के सभी स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थान (डी.एल.एड.) के समस्त शिक्षक-प्रशिक्षकों को लिया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन विधि— प्रस्तुत शोध में वाराणसी जनपद के सभी स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के कुछ संस्थानों का चयन सोद्देश्य न्यादर्श विधि के उपयोग द्वारा किया गया एवं चयनित संस्थानों के सभी शिक्षक-प्रशिक्षकों को न्यादर्श के रूप में सम्मलित किया गया है। न्यादर्श के चयन का विवरण निम्न है—

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है। जिसकी विश्वसनीयता $r = 0.86$ है एवं वैधता का निर्धारण करने के लिए प्रत्यक्ष वैधता विधि का उपयोग किया गया है व विश्वसनीयता का निर्धारण करने के लिए परीक्षण-पुनःपरीक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकी विश्लेषण

इस शोध में आँकड़ो के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन, 'टी'-परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

सीमांकन

1. यह अध्ययन वाराणसी जनपद तक सीमित है।
2. अध्ययन केवल स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के शिक्षक-प्रशिक्षकों तक सीमित है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं परिणामों की प्राप्ति तथा व्याख्या— प्रस्तुत शोध से प्राप्त आँकड़ों एवं उनके विश्लेषण व प्राप्त परिणाम को प्रस्तुत किया गया है।

न्यादर्श चयन प्रक्रिया

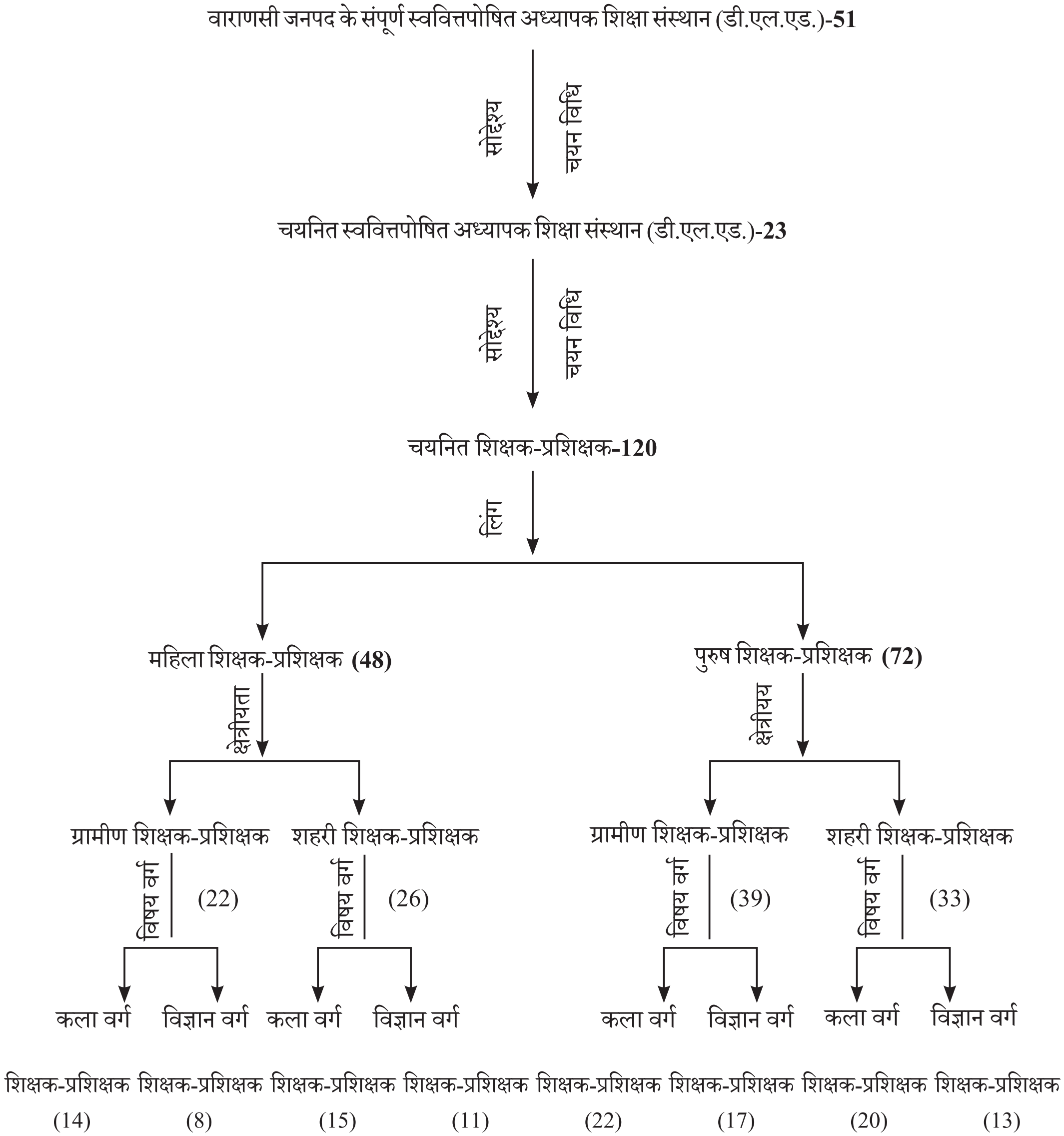

उद्देश्य संख्या 1

अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर ज्ञात करना

प्रस्तुत शोध उद्देश्य 1 के विश्लेषण के उपरांत यह पाया गया कि वाराणसी जनपद के स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों के 35 प्रतिशत शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर निम्न व 33.34 प्रतिशत शिक्षक-प्रशिक्षकों का सामान्य एवं 31.66 प्रतिशत शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर उच्च पाया गया।

तालिका 1— अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का प्रतिशत स्तर

क्र.सं.	व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर	स्तर का विस्तार (मध्यमान में)	शिक्षक-प्रशिक्षकों की संख्या	प्रतिशत %
1.	निम्न स्तर	(1–5)	42	35
2.	सामान्य स्तर	(5.1–7)	40	33.34
3.	उच्च स्तर	(7.1–11)	38	31.66
कुल			120	100

आरेख— अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति के प्रतिशत स्तर का आरेख

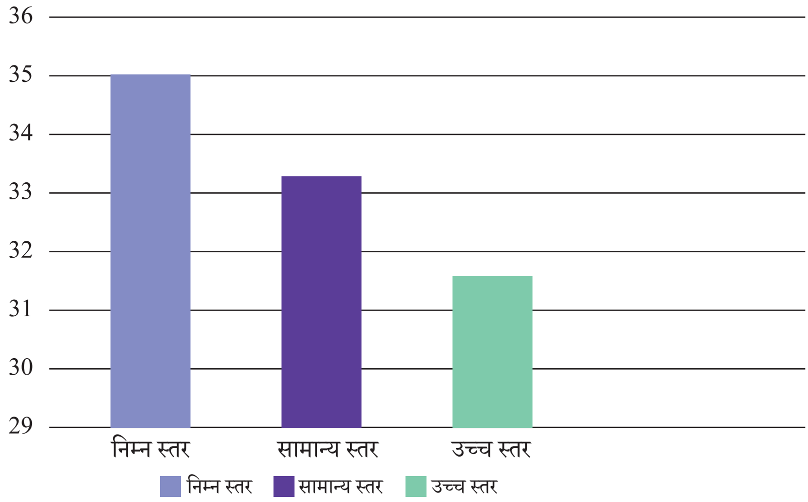

उद्देश्य 1 के परिणामों की व्याख्या

उपरोक्त तालिका एवं आरेख से स्पष्ट है कि वाराणसी जनपद के स्ववित्तपोषित आध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के कुल 120 शिक्षक-प्रशिक्षकों में से 42 (35 प्रतिशत) शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर निम्न अर्थात नकारात्मक व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति रखते हैं, 40 (33.34 प्रतिशत) व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर सामान्य अर्थात सामान्य व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति रखते हैं तथा 38 (31.66 प्रतिशत) शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति के स्तर उच्च स्तर अर्थात सकारात्मक व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति रखते हैं। इसका कारण शिक्षक-प्रशिक्षकों की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक स्थितियों का स्तर निम्न होना हो सकता है।

उद्देश्य संख्या 2

अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के महिला एवं पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

उद्देश्य संख्या 2 के आधार पर शोध परिकल्पना

H_1. अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के महिला एवं पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर हैं।

आँकड़ो का विश्लेषण

उपरोक्त शोध परिकल्पना की सांख्यिकीय जाँच हेतु स्वपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के पुरुष एवं महिला शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति ज्ञात करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन और 'टी'-परीक्षण का उपयोग किया गया जिसको निम्न तालिका 2 में दर्शाया गया हैं।

उद्देश्य संख्या 2 के परिणामों की व्याख्या

उक्त तालिका 2 के अवलोकन से यह विदित होता है कि वाराणसी जनपद के स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के पुरुष एवं महिला शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का परीक्षण किया गया जिसमें 71 पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों एवं 49 महिला शिक्षक-प्रशिक्षकों का मध्यमान क्रमशः 48.19 व 44.66 एवं मानक विचलन क्रमशः 20.88 व 19.23 है एवं 'टी'-मूल्य 0.34 है जो की 0.05

तालिका 2— अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के महिला एवं पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का 'टी'-मूल्य

क्र.सं.	लिंग	शिक्षक-प्रशिक्षकों की संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	स्वतंत्र कोटि (df)	टी-मूल्य
1.	पुरुष	71	48.19	20.88	118	0.348
2.	महिला	49	19.66	19.23		

*0.05 सार्थकता स्तर पर

सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.96 (df = 118) से कम है। अतः उक्त उद्देश्य से संबंधित शोध परिकल्पना, "अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के महिला एवं पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर हैं।" को अस्वीकार किया जाता है अतः शोध परिकल्पना को अस्वीकार करने का कारण स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों के पुरुष एवं महिला शिक्षक-प्रशिक्षकों की आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक स्थितियों में एकरुपता का होना हो सकता है।

उद्देश्य *संख्या 3*

अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

उद्देश्य संख्या 3 के आधार पर शोध परिकल्पना

H_2. अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

आँकड़ों का विश्लेषण

उक्त शोध परिकल्पना की सांख्यिकीय जाँच हेतु स्वपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति ज्ञात करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन और 'टी'-परीक्षण का उपयोग किया गया जिसको निम्न तालिका 3 में दर्शाया गया हैं।

उद्देश्य संख्या 3 के परिणामों की व्याख्या

उपयुक्त तालिका 3 के अवलोकन से यह विदित होता है कि वाराणसी जनपद के स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का परीक्षण किया गया जिसमें 61 ग्रामीण शिक्षक-प्रशिक्षकों एवं 59 शहरी शिक्षक-प्रशिक्षकों का मध्यमान क्रमशः 46.47 व 47.05 और मानक विचलन क्रमशः 20.42 व 21.63 है, एवं 'टी'-मूल्य 0.724 है जो की 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.96 (df = 118) से कम है। अतः उक्त उद्देश्य से संबंधित शोध परिकल्पना, "अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर हैं।" को अस्वीकार किया जाता है। अतः शोध परिकल्पना को अस्वीकार करने का कारण अध्यापक शिक्षा संस्थानों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक-प्रशिक्षकों की आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक स्थितियों में एकरूपता होना हो सकता है।

तालिका 3— अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.)के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का 'टी'-मूल्य

क.सं.	क्षेत्रीयता	शिक्षक-प्रशिक्षकों की संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	स्वतंत्र कोटि (df)	टी-मूल्य
1.	ग्रामीण	61	46.47	20.42	118	0.724
2.	शहरी	59	47.05	21.63		

*0.05 सार्थकता स्तर पर

उद्देश्य संख्या 4

अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के कला एवं विज्ञान वर्ग शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

उद्देश्य संख्या 4 के आधार पर शोध परिकल्पना

H_3. अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

आँकड़ों का विश्लेषण

उक्त शोध परिकल्पना की सांखिकीय जाँच हेतु स्वपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति ज्ञात करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन और 'टी'-परीक्षण का उपयोग किया गया जिसको निम्न तालिका 4 में दर्शाया गया हैं।

उद्देश्य संख्या 4 के परिणामों की व्याख्या

उपयुक्त तालिका 4 के अवलोकन से यह विदित होता है कि वाराणसी जनपद के स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के शहरी कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का परीक्षण किया गया जिसमें 71 कला वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों एवं 49 विज्ञान वर्ग शिक्षक-प्रशिक्षकों का मध्यमान क्रमशः 45 व 45.82 एवं मानक विचलन क्रमशः 20.04 व 21.50 है, एवं 'टी'-मूल्य 0.94 है जो की 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.96 (df = 118) से कम है। अतः उक्त उद्देश्य से संबंधित शोध परिकल्पना "अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर हैं।" को अस्वीकार किया जाता है अतः शोध परिकल्पना को अस्वीकार करने का कारण अध्यापक शिक्षा संस्थानों के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक स्थितियों में एकरूपता होना हो सकता है।

अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम यह इंगित करते हैं कि स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर निम्न है, वर्तमान समय में शिक्षक-प्रशिक्षण की गुणवत्ता गिरती जा रही है। इसका कारण इन संस्थानों के शिक्षक-प्रशिक्षकों

तालिका 4— अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का 'टी'-मूल्य

क्र.सं.	विषय वर्ग	शिक्षक-प्रशिक्षकों की संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	स्वतंत्र कोटि (df)	टी-मूल्य
1.	कला वर्ग	71	45	20.04	118	0.94
2.	विज्ञान वर्ग	49	45.82	21.50		

*0.05 सार्थकता स्तर पर

का आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक रूप से शोषण होना है जिससे शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर गिरता चला जा रहा है यह आवश्यक है कि शिक्षा या स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी. एल.एड.) से जुड़े प्रबंधक, प्राचार्य, नीति-निर्माता, शैक्षिक सरकारी संस्था, शिक्षक-प्रशिक्षकों से जुड़े समस्याओं को दूर करें, ताकि शिक्षक-प्रशिक्षकों का व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति सकारात्मक व उच्च बन सकें, वह अपने सामाजिक, शैक्षिक परिवेश में आने वाली चुनौतियों का सामना कर सकें तथा तन्मयता व निष्ठा से शिक्षक-प्रशिक्षण प्रदान कर सकें जिससे शिक्षक-प्रशिक्षण के क्षेत्र में गुणोत्तर वृद्धि हो सके। अतः अध्ययन के निष्कर्ष द्वारा स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति के स्तर को उच्च बनाने व नीति-निर्माताओं को अध्यापक शिक्षा प्रणाली से संबंधित नई नीतियों के निर्माण में सहायता मिलेगी।

शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध उद्देश्य 1 के विश्लेषण के उपरांत यह पाया गया कि वाराणसी जनपद के स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के ज़्यादातर शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर निम्न अर्थात नकारात्मक है। प्रस्तुत उद्देश्य 2 के विश्लेषण के उपरांत यह पाया गया कि वाराणसी जनपद के स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के महिला एवं पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है। प्रस्तुत उद्देश्य 3 का विश्लेषण करने के उपरांत यह पाया गया कि ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है, प्रस्तुत उद्देश्य 4 का विश्लेषण करने के उपरांत यह पाया गया कि वाराणसी जनपद के स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है, इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि वाराणसी जनपद के स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के ज़्यादातर शिक्षक-प्रशिक्षकों का व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का स्तर निम्न है इसका कारण स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थाओं (डी.एल.एड.) के शिक्षक-प्रशिक्षकों की आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर का निम्न होना हो सकता है, जबकि इन चरों— लिंग (महिला या पुरुष), क्षेत्रीयता (ग्रामीण या शहरी) तथा विषय वर्ग (कला या विज्ञान) के आधार पर स्ववित्तपोषित अध्यापक शिक्षा संस्थानों (डी.एल.एड.) के शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति में एकरूपता पाई गई।

संदर्भ

गुप्ता और ममता. 2009. *भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्या*. पृ. 392. साहित्य प्रकाशन, आगरा.

गुप्ता, एस.पी. 2013. *आधुनिक मापन एवं सांख्यिकीय*. पृ. 280. शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.

फोनिया, वी. 2016. देहरादून जिले में माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापकों की अध्ययन के प्रति अभिवृत्ति का एक अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजकेशन रिसर्च.* मार्च–अप्रैल 2016 (1), वी.आई.पी. 498505.

यादव, ए.के. 2002. शिक्षक प्रशिक्षुओं के शिक्षण में प्रति दृष्टिकोण का एक अध्ययन. *शोध प्रबंध.* वी.बी.एस. पूर्वांचल विश्वविद्यालय. 2 मार्च 2022 को http://hdl.handle.net/10603/182804 से प्राप्त।

यादव, एस.के. 2011. माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति मूल्य एवं शिक्षण दक्षता का तुलानात्मक अध्ययन. वी.बी.एस. पूर्वांचल. 28 मार्च 2022 को http://hdl.handle.net/10603/329918 से प्राप्त।

शर्मा, आर.ए. 2008. *अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण तकनीकी.* पृ. 3. आर. लाल डिपो, मेरठ.

शर्मा, आर. 2013. टीचिंग एटीट्यूड हायर सेकेंडरी टीचर ऑफ रायबरेली. *जर्नल ऑफ इंडिया रिसर्च* वैल्यू. एन. 3, सितंबर 2013, आई.एस.एस.एन. 2311–4155, पृ.सं. 154–158.

सोइबमच, ए. और अन्य 2016. शिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति का प्रभाव. *ग्लोबल जर्नल ऑफ इंटर्डिसप्लनेरी सोशल साइंस.* 5(3), पृ.सं. 49–51, बी.आई.पी. 2319–8834. www.gifre.org

सिंह. एस. 2021. प्रोफेशनल अमंग टीचर एज़ूकेशनल ऑफ डिस्टिक्ट इंस्टीट्यूड ऑफ एजूकेशन एंड ट्रेनिंग (डी.आई.ई.टी.) इन पूर्वांचल रीजन (अनपब्लिश्ट पी.एच.डी. थीसिस). बनारस हिंदू विश्वविद्यालय.

हुसैन, ए. 2018. एटीट्यूड ऑफ बी.एड. स्टूडेंट टूवर्ड्स टीचिंग प्रोफेशनल इन वेस्ट बंगाल. *रिसर्च गुरू जर्नल मल्टीडिसिप्लिनरी सब्जेक्ट.* 12(1), पृ.सं. 155–160.